November 2016

May 2016
141-225
Friday 20

B.A. Part I
Hindi Hons

डॉ० अनामिका कुमार
9/2/2021

(3)

तुलसी - क्रमशः -

का चरित्र है। पूरे संसार के साहित्य में यह विरोधी चरित्र बेजोड़ है। तुलसी के चरित्र अपनी सम्पूर्णता में जितने विराट हैं, रंग चित्रों में उतने ही सजीव और विविध है।

तुलसी ने अपने चरित्र के आलोक में केवल मनुष्य को ही देवता नहीं बनाया बल्कि देवताओं को भी मानवीय धरातल पर उतार कर धरती और स्वर्ग के बीच एक इन्द्रधनुषी सेतु तैयार कर दिया है। राम के चरित्र का मानवीय पक्ष ही उनके व्यक्तित्व का सबसे बड़ा आकर्षण है। सीता का हरण हो जाने पर राम सामान्य मानव की तरह पशु-पक्षियों से सीता का पता पूछते हैं —

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी
तुम देखी सीता मृगनैनी ॥

लक्ष्मण के शक्तिबाण लगने पर भी वे अपने पुरुषार्थ को भूलकर एक सामान्य मानव की तरह विलाप करते हैं —

जैहउँ अवध कौन मुँह लाई।
नारी हेतु प्रिय बंधु गँवाई ॥

अयोध्याकांड को 'रामचरितमानस' का हृदय माना गया है। इसको मानस में वही स्थान प्राप्त है जो कामायनी में लज्जा सर्ग का। इस कांड में राम का चरित्र सबसे अधिक लौकिक धरातल पर प्रतिष्ठित है।

महाकवियों का काव्य अपने युग के साथ-साथ युग-युग के लिए भी होता है वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी होता है।

क्रमशः -